दंडकारण्य एक बार देवताओं और असुरों के बीच भीषण युद्ध हुआ। राजा दशरथ भी अपनी रानी कैकई को ले कर इंद्र की सहायता के लिए गए। युद्ध में शक्तिशाली शंभर ने दशरथ को घायल कर दिया और वे अचेत हो कर गिर पड़े। कैकई  ने तुरंत रथ  युद्ध स्थल से निकाल लियाऔर उनकी जान बचा दी दशरथ केकई से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे दो वरदान देने का वचन दिया।  कई सालों बाद, राजा दशरथ ने अयोध्या का राजकाज अपने बेटों को सौंपने का निश्चय किया। वे राम को अगला राजा बनाना चाहते थे। केकई  की दुष्ट दासी मंथरा ने कैकई  को भड़का दिया और उससे बोली कि राजा का निर्णय सही नहीं है क्योंकि भरत तो  राम से अधिक योग्य है,इसलिए राज्याभिषेक भरत का होना चाहिए। उत्तर दिया कि राम भी उसके बेटे के समान हैं और भरत भी राम का बहुत आदर करता है।  मंथरा ने समझाया कि राम राजा बनने के बाद बहुत शक्तिशाली हो जाएगा और बाकी सब को उसके अधीन रहना पड़ेगा। इस तरह मंथरा ने केकई के मन में विष घोल दिया। उसने के कई को याद दिलाया कि दशरथ ने उसे दो वरदान दिए हैं और उन पर दानों को मांगने का यही सही समय है। केकई मंथरा के कुचक्र में फस गई और उसने दशरथ से दो वरदान मांग लिए पहला भरत को राज्य अभिषेक और दूसरा राम को 14 साल का बनवास। राम के वनवास का समाचार सुनते ही महल में ही नहीं, पूरी अयोध्या नगरी में उदासी छा गई थी। अयोध्या की प्रजा बहुत दुखी हुई। राम भी राजा दशरथ और कैकई से मिलने पहुंच गए। राम ने अपने पिता को थका मांडा और उदास देखा। वे समझ गए कि समस्या का एकमात्र समाधान कैकई की मांग पूरी करते हुए अयोध्या से निकल जाना ही है।